धान के प्रमुख कीट एवं उनके नियंत्रण के उपाय

अरविन्द कुमार [1], डॉ. उमेश चन्द्र [2], डॉ. राम वीर [3] एवं शिवम कुमार [4]
[1, 4] शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग
[2] सहायक–प्राध्यापक, कीट विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश– 224229
Email Id: ak847051@gmail.com

परिचय

धान खरीफ फसलो में प्रदेश की मुख्य फसल है, देश में धान उत्पादक राज्यों में पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब, उड़ीसा, बिहार व छत्तीसगढ़ है। धान की शुरूआत नर्सरी से होती है, इसलिए बीजों का अच्छा होना जरुरी है, मई की शुरूआत से किसानों को खेत की तैयारी करनी चाइये, ताकि मानसून आते ही रोपाई कर दें, किसानों को बीज शोधन के प्रति जागरूक होना चाइये। बीज शोधन से कई तरह के कीटों से बचाया जा सकता है।

धान में 6 से 7 प्रतिशत प्रोटीन, 2 से 2.5 प्रतिशत वसा पाया जाता है। धान एक प्रमुख फसल है जिससे चावल निकाला जाता है, चावल एक भारत सहित एशिया एवं विश्व का मुख्य भोजन है, धान में अनेक प्रकार के कीट पतंगे बहुत नुकसान पहुचाते है, जिससे उत्पादन में कमी आती है और आर्थिक नुकसान भी होता है, जो निम्नलिखित प्रकार के होते है:

प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण–

दीमक:

पहचान एवं लक्षण: यह एक सामाजिक कीट है तथा कालोनी बनाकर रहते हैं। एक कॉलोनी में 90 प्रतिशत श्रमिक, 2 से 3 प्रतिशत सैनिक, एक रानी व एक राजा होते हैं, श्रमिक पीलापन लिए हुए सफेद रंग के होते हैं। जो अंकुरित हो रहे बीज एवं रोपीत पौधों की जड़ों को खाते हैं।

नियंत्रण के उपाय:

» जायद की फसल काटने के बाद खेत को खरपतवार व फसल के अवशेषों को साफ कर देना चाइये।

» दीमक बाहुल्य क्षेत्र में कच्चे गोबर एवं हरी खाद का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

» नीम की खली 10 से 15 कुंतल प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के पहले खेत में मिलाना चाहिए।

» क्लोरोपाईरीफोस 50 प्रतिशत और साईपरमेथ्रिन 5 प्रतिशत ई. सी. मिश्रण को 750 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से 500 से 600 लीटर पानी में घोल कर 1 से 2 छिड़काव करें।

हरा फुदका:

पहचान एवं लक्षण: इस कीट के प्रौढ़ हरे रंग के होते हैं, यह वानस्पतिक एवं कली अवस्था में एक से दो कीट प्रति वर्ग मीटर में देखने को मिलते हैं। इनके उपरी पंखों के दोनों किनारों पर काले बिंदु पाये जाते हैं, इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों से रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं, जिससे पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं।

नियंत्रण के उपाय:

» खेत एवं मेड़ो को खरपतवार मुक्त रखें।

» समय से रोपाई करें।

» फसल की साप्ताहिक निरिक्षण करें।

» थायोमेथोक्जाम 25 प्रतिशत डब्लू. जी. 100 ग्राम की दर से 500 से 600

लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

भूरा फुदका:

पहचान एवं लक्षण– इस कीट के प्रौढ़ भूरे रंग के पंखयुक्त तथा शिशु पंखहीन होते है, यह कीट वानस्पतिक एवं बाली अवस्था में 15 से 20 कीट प्रति पुंज पाए जाते है। इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों एवं कल्ले के मध्य रस चूसकर क्षति पहुच. ाते है, जिसके फलस्वरूप पौधे सूखने लगते है।

नियंत्रण के उपाय:

» खेत एवं मेड़ो को खरपतवार मुक्त रखें।

» समय से रोपाई करें।

» फसल की साप्ताहिक निगरानी करें।

» भूरा फुदका कीट बाहुल्य क्षेत्रों में 20 पंक्तियों के बाद एक पंक्ति छोड़कर रोपाई करना चाहिए।

» इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस. एल. 125 मिली की दर से 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

तना बेधक:

पहचान एवं लक्षण: यह पीले रंग के होते हैं, इनका आकार 20 मिमी. होता है, मादा भूरे एवं पीले रंग की होती है। इस कीट की मादा पत्तियों पर समूह में अंडे देती हैं। अन्डो से सूड़ियाँ निकल. कर तनों में घुसकर मुख्य तने को क्षति पहुचाती है, जिससे बालियाँ आने पर सफेद दिखाई देती हैं। यह कीट वान. स्पतिक अवस्था में 5 प्रतिशत मृतभोग प्रति वर्ग मीटर देखने को मिलता है।

नियंत्रण के उपाय:

» खेत एवं मेड़ो को खरपतवार मुक्त रखें।

» समय से रोपाई करें।

» फसल की साप्ताहिक निगरानी करें।

» प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें।

» तना बेधक कीट के पूर्वानुमान एवं नियंत्रण हेतु 5 फेरोमोने ट्रैप प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना चाहिय।

» प्रोफेनोफोस 40 प्रतिशत और सा. ईंपरमेथ्रिन 4 प्रतिशत ई. सी. मिश्रण को 1250 मिली की दर से 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अन्तराल पर 1 से 2 छिड़काव करें।

पत्ती लपेटक कीट:

पहचान एवं लक्षण: इस कीट की सुड़ियाँ प्रारम्भ में पीले रंग तथा बाद में हरे रंग की हो जाती हैं, जो पत्तियों को लम्बाई में मोड़कर अन्दर से इसके हरे भाग को खुरच कर खाती है, यह वानस्पतिक अवस्था में 2 नई प्रकोपित पत्तियाँ प्रति पुंज देखने को मिलती है।

नियंत्रण के उपाय:

» खेत एवं मेड़ो को खरपतवार मुक्त रखें।

» समय से रोपाई करें।

» फसल की साप्ताहिक निगरानी करें।

» प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें।

» एसिफेट 75 प्रतिशत एस. पी. 666 से 750 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 600 लीटर पानी में घोलकर 10 से 12 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

गन्धी बग:

पहचान एवं लक्षण: इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ लम्बी टांगों एवं भूरे रंग के होते है तथा प्रभावित फसल से एक विशेष प्रकार की गन्ध आती हैं। यह बालियों की दुग्धावस्था में दानो में बन रहे दूध को चूसकर क्षति पहुचाते हैं जिससे दाना खोखला रह जाता है बाली की दुग्धावस्था पर 1 से 2 कीट प्रति पुंज दिखाई देते हैं।

नियंत्रण के उपाय:

» खेत एवं मेड़ो को खरपतवार मुक्त रखें।

» समय से रोपाई करें।

» फसल की साप्ताहिक निरिक्षण करें।

» प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें।

» इमिडाक्लोप्रिड 70 प्रतिशत डब्लू. जी. 150 ग्राम, 500 से 600 लीटर पानी में घोलबनाकर एक से दो छिड़काव करें या थायोमेथोक्जाम 25 प्रतिशत डब्लू. जी. 100 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।